सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह 1998

11 अप्रैल, 1998 वार शनिवार

स्थानः अग्रोहाधाम, अग्रोहा (हिसार-हरियाणा)

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार

"स्मृति - चिन्ह"

स्मृति चिन्ह

श्री हरपतराय टांटिया

अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-125047

ट्रस्ट के कार्यवाहक अध्यक्ष एवं सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यप्रकाश आर्य द्वारा सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ का अभिनंदन

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ का ट्रस्ट के पूर्व कार्यवाहक अध्यक्ष श्रीकिशन मोदी द्वारा स्वागत-अभिनंदन

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ - उदारमना यशस्वी दानवीर

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ द्वारा निर्मित रेडक्रास मातृ सेवासदन, सिरसा का एक दृश्य

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ - अग्रोहा विकास ट्रस्ट के खुले अधिवेशन में। पास में बैठे है ट्रस्ट के पूर्व कार्यवाहक अध्यक्ष श्रीकिशन मोदी एवं श्री शीतल कुमार अग्रवाल, मुम्बई

अग्रोहा विकास ट्रस्ट अग्रोहा
सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार
- परिचय एवं स्वरूप -

पुरस्कार की परम्परा चिरकाल से चली आ रही है। इसका उद्देश्य समाज में श्रेष्ठ उद्दात प्रवृतियों को पल्लवित तथा प्रोत्साहित करना है। यद्यपि निस्वार्थ, निस्पृह समाजसेवियों को अपने श्रेष्ठ कार्यों के बदले किसी प्रतिदान की अपेक्षा नहीं होती,

फिर भी समाज का कर्त्तव्य है कि वह मानव-मात्र के लिए अपना जीवन समर्पित करने वालों के लिए कुछ ऐसा करे, जिससे समाज में सद्कार्यों के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा एवं प्रतिस्पर्द्धा पैदा हो तथा बुरा कार्य करने वाले हतोत्साहित हों। पुरस्कार समाज व्यवस्था को सुधारने का सकारात्मक पहलू है।

इसके अलावा पुरस्कारों का एक अन्य उद्देश्य भी होता है। कुछ पुरस्कार व्यक्ति विशेष की स्मृति को बनाए रखने एवं विशेष उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भी प्रारम्भ किये जाते हैं। ये पुरस्कार किसी व्यक्ति-विशेष के नाम पर आधारित होते हैं और उनका विशिष्ट उद्देश्य होता है।

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा प्रवर्तित इसी प्रकार के पुरस्कार हैं, जिनका उद्देश्य श्री सर्राफ के जीवन से समाज के बंधुओं को श्रेष्ठ एवं समाजहित के कार्यों हेतु धन के विनियोजन की प्रेरणा देने के साथ-साथ पावन तीर्थ अग्रोहा के निर्माण, विकास को गति देना तथा जीवन के किसी भी क्षेत्र में समाज को गौरवान्वित करने वाले श्रेष्ठ कार्यकर्त्ताओं एवं उपलब्धि प्राप्त व्यक्तियों को सम्मानित करना है।

इन पुरस्कारों की परिकल्पना सिरसा के स्वनामधन्य सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ एवं उनके परिवार के लोगों के दान से संभव हुई है। कभी-कभी अच्छे कार्य संयोगवश हो जाते हैं। महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा के श्रीगंगानगर से शुभारंभ के अवसर पर अग्रोहा विकास ट्रस्ट के तत्कालीन अध्यक्ष श्री सुभाष गोयल, चेयरमेन, जी. टीवी., डॉ. चम्पालाल गुप्त के आवास पर महाराजा अग्रसेन अध्ययन संस्थान के उद्घाटन के लिए पधारे हुए थे। श्री सर्राफ भी वहां उपस्थित थे। रथयात्रा का समारोह कुछ ही क्षणों बाद प्रारम्भ होने वाला था। चलते-चलते डॉ. गुप्त ने श्री सर्राफ को इस ऐतिहासिक यात्रा के शुभारम्भ पर कुछ ऐसा करने की प्रेरणा दी, जिससे उनका नाम अमर हो जाये। बस बातों ही बातों में प्रति वर्ष एक लाख रूपये के पुरस्कार देने हेतु सेठ जी ने अपनी ओर से 501011/- रु. देने के लिए सहमति प्रदान कर दी। इस घोषणा से समारोह के आयोजनकर्त्ताओं में विशेष उत्साह की लहर दौड़ पड़ी। इस घोषणा के लिए ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुभाष गोयल एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा आपको सम्मानित किया गया और आपके उदार दान की सभी उपस्थित व्यक्तियों ने भूरि-भूरि सराहना करते हुए उसे समाज के अन्य व्यक्तियों के लिए अनुकरणीय बताया।

इस अवसर पर समाज की अनेक विभूतियाँ जैसे सर्वश्री सत्यप्रकाश आर्य, श्रीकिशन मोदी, स्वरूपचन्द गोयल, रामेश्वरदास गुप्त, डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल, बद्रीप्रसाद अग्रवाल, प्रो० गणेशीलाल आदि उपस्थित थे। सबने इसके लिए सेठजी का साधुवाद किया।

बाद में सेठजी ने स्वप्रेरणा से इस राशि को एक लाख और बढ़ाकर 601011/- रु. कर दिया और इस प्रकार श्री रामप्रसाद पोद्दार राष्ट्रीय पुरस्कार की श्रृंखला में दो पुरस्कार और जुड़ गए।

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार समिति

मुख्य-संवैधानिक-बिन्दु

- पुरस्कार का नाम सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार रहेगा तथा इस उद्देश्य के लिए गठित समिति का नाम '**सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार समिति**' होगा।
- समिति का प्रधान कार्यालय 'अग्रोहा' में रहेगा।
- समिति का कार्यकाल तीन वर्ष का रहेगा तथा वर्ष 1 अप्रेल 1997 से प्रारम्भ माना जायेगा।
- समिति का कार्यकाल समाप्त होने पर ट्रस्ट की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का पुन: गठन करेगी।
- पुरस्कारों का संचालन ट्रस्ट/समिति द्वारा किया जायेगा। इस उद्देश्य हेतु श्री द्वारिकाप्रसाद सर्राफ, उनके परिवार तथा सहयोगियों द्वारा 601011/- रु. की राशि सुरक्षित स्थायी निधि हेतु जुटाई जायेगी। इस निधि में वृद्धि हेतु धनराशि जुटाने, एकत्र करने का अधिकार ट्रस्ट अथवा समिति को होगा। स्थायी निधि पूर्ण रूप से सुरक्षित रहेगी और केवल उससे प्राप्त ब्याज की राशि का ही उपयोग घोषित उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जायेगा।
- इस उद्देश्य हेतु प्रदत्त/एकत्र राशि बैंक अथवा उन सरकारी संस्थाओं में, जिनमें पूर्ण सुरक्षा हो, अग्रोहा विकास ट्रस्ट सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार समिति के नाम से सावधि जमा खाते में जमा कराई जायेगी। इस राशि को निकालने में ट्रस्ट की वर्तमान केन्द्रीय कार्यकारिणी के दो पदाधिकारियों व कोषाध्यक्ष में दो के हस्ताक्षर आवश्यक होंगे। सावधि जमा राशि को निकलवाते समय श्री द्वारिकाप्रसाद सर्राफ या उन द्वारा मनोनीत व्यक्ति की सहमति आवश्यक समझी जायेगी।
- पुरस्कार हेतु संगठित समिति में ग्यारह सदस्य होंगे, जिनमें तीन सदस्य अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष, महामंत्री तथा कोषाध्यक्ष एवं चार सदस्य श्री द्वारिकाप्रसाद सर्राफ अथवा उनके द्वारा घोषित अधिकृत उत्तराधिकारी द्वारा मनोनीत होंगे। शेष चार सदस्यों का चयन अग्रोहा विकास ट्रस्ट की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा सर्वसम्मति या बहुमत से किया जायेगा। समिति की अध्यक्षता ट्रस्ट के अखिल भारतीय अध्यक्ष करेंगे। श्री द्वारिकाप्रसाद सर्राफ अथवा उनके द्वारा घोषित अधिकृत व्यक्ति द्वारा मनोनीत सदस्यों की संख्या किसी भी स्थिति में चार से कम नहीं की जा सकेगी।
- पुरस्कारों की राशि, स्मृति फलक, शाल, प्रशस्ति पत्र, पुरस्कार के प्रचार प्रसार, विज्ञापन तथा आयोजन की समस्त व्यवस्था का दायित्व ट्रस्ट/समिति का होगा। स्थायी निधि से प्राप्त ब्याज की राशि के कम होने की अवस्था में भी ट्रस्ट अनिवार्य रूप से पुरस्कारों की व्यवस्था करेगा।
- पुरस्कारों की राशि अथवा संख्या किसी भी परिस्थिति में कम नहीं की जा सकेगी, अपितु सुविधा एवं साधनों के अनुरूप उसमें वृद्धि की जा सकेगी।
- अपरिहार्य परिस्थितियों के वश समिति के भंग होने पर राशि ट्रस्ट के खाते में जमा कर दी जायेगी, जो ट्रस्ट की सम्पति होगी किन्तु उसका उपयोग घोषित पुरस्कारों के लिए ही किया जायेगा।
- अग्रोहा विकास ट्रस्ट की कार्यकारिणी, सेठ द्वारिकाप्रसाद राष्ट्रीय पुरस्कार समिति तथा निर्णायक समिति के सदस्य-पदाधिकारी अथवा उनके परिवार के सदस्य पुरस्कार के लिए पात्र नहीं होंगे।

पुरस्कारों का उद्देश्य

पुरस्कारों का उद्देश्य सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ, सिरसा की दानशीलता, समाजसेवा, त्याग, ट्रस्टीशिप एवं सामाजिक कार्यों हेतु धन के सदुपयोग की प्रवृत्ति को समाज के सम्मुख लाना, उन्हें आदर्श एवं प्रेरणास्त्रोत के रूप में उपस्थित करना, महाराजा अग्रसेन के सिद्धान्तों में आस्था रखने वाले, उनके प्रचार-प्रसार में रत निस्वार्थ समाज सेवियों, कार्यकर्त्ताओं, संस्थाओं अथवा विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त प्रतिभाओं को पुरस्कृत तथा प्रोत्साहित करना है, जिससे पावन अग्रोहा तीर्थ के निर्माण, विकास तथा समाज सेवा के कार्यों को विशेष गति मिल सके और कार्यकर्त्ताओं को उससे प्रेरणा प्राप्त हो।

पुरस्कार प्रदान करने सम्बंधी नियम

- पुरस्कार प्रतिवर्ष दिए जायेगे। पुरस्कारों की संख्या दो होगी तथा प्रत्येक पुरस्कार की राशि 51000/-रु. होगी। पुरस्कार के अलावा प्रत्येक पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता को एक स्मृति फलक, शाल, प्रशस्ति पत्र तथा श्रीफल से सम्मानित किया जाएगा।
- पुरस्कार निम्नांकित क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त व्यक्तियों, संस्थाओं को प्रदान किये जायेंगे-

  (अ) अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल के प्रचार-प्रसार, सामाजिक संगठन तथा समाज सुधार की दिशा में उल्लेखंनीय कार्य अथवा पावन तीर्थ अग्रोहा के विकास तथा निर्माण में विशेष योगदान।

  (ब) अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवाल/वैश्य सम्बन्धी उपलब्धियों। इतिहास पर शोध अथवा तत्संबंधी श्रेष्ठ मौलिक साहित्य का लेखन, प्रकाशन।

  (स) धार्मिक, सांस्कृतिक, शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, कला, चिकित्सा, शोध समाजसेवा आदि के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि, जिससे समाज का नाम ऊँचा तथा उसके गौरव में अभिवृद्धि हुई हो।
- पुरस्कार प्राप्त करने वाला व्यक्ति भारत अथवा भारतीय मूल का नागरिक तथा महाराजा अग्रसेन द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, समानता, लोकतंत्र एवं उच्च आदर्शों के प्रति निष्ठा एवं समर्पण की भावना से युक्त होना चाहिये।
- पुरस्कारों की घोषणा यथा संभव श्री द्वारिकाप्रसाद सर्राफ की जन्मतिथि 4 सितम्बर को की जायेगी तथा चार माह पूर्व ट्रस्ट की प्रमुख पत्रिका के माध्यम से इनका प्रचार-प्रसार तथा इस हेतु सार्वजनिक रूप से योग्य व्यक्तियों, संस्थाओं के नाम संबंधी प्रस्ताव पूर्ण विवरण सहित आमंत्रित किये जायेंगे। पुरस्कार हेतु आवेदन/प्रस्ताव स्वयं अर्ह व्यक्ति, संस्था अथवा भारत या विदेश स्थित किसी भी नागरिक/संस्था द्वारा पुरस्कार के लिए निर्धारित नियमों के अन्तर्गत किया जा सकेगा। समिति/ट्रस्ट अथवा निर्णायक समिति के सदस्यों को भी अपनी ओर से पूर्ण विवरण सहित योग्य व्यक्तियों, संस्थाओं के नाम प्रस्तावित करने का अधिकार प्राप्त होगा ताकि पुरस्कार के उद्देश्यों के अनुकूल योग्यतम व्यक्ति का चयन संभव हो सके।
- पुरस्कार पर निर्णय करते समय तत्संबंधी व्यक्तियों/संस्थाओं की ठोस उपलब्धियों को दृष्टिगत रखा जायेगा और इस प्रकार के मानदण्ड अपनाये जायेंगे, जिनसे पुरस्कारों की विश्वसनीयता, स्तर तथा गौरव में अभिवृद्धि हो तथा वे सार्वजनिक मानदण्डों में भी खरे उतरें।
- पुरस्कार अग्रोहा में आयोजित विशेष वार्षिक मेले के अवसर पर प्रदान किये जायेंगे किन्तु परिस्थिति एवं सुविधानुसार स्थान एवं समय में परिवर्तन किया जा सकेगा।

सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार समिति के सदस्य

डॉ. चम्पालाल गुप्त
संयोजक पुरस्कार समिति

1. श्री नंदकिशोर गोईन्का
   अध्यक्ष, अग्रोहा विकास ट्रस्ट
2. श्री देवराज एडवोकेट, 'भगतजी'
   महामंत्री, अग्रोहा विकास ट्रस्ट
3. श्री द्वारिकाप्रसाद सर्राफ
4. श्री श्रीकिशन मोदी
5. श्री स्वरूपचंद गोयल
6. डॉ. चम्पालाल गुप्त, संयोजक
7. श्री द्वारिकाप्रसाद 'दुर्जनपुरिया' अग्रवाल
8. श्री राजेश कुमार सर्राफ
9. श्री वेदप्रकाश सिंघल, एडवोकेट
10. श्री सोहनलाल सिंगला

श्री संदीप सर्राफ सुपुत्र श्री सुशील सर्राफ, श्री द्वारिकाप्रसाद सर्राफ के मनोनीत प्रतिनिधि होंगे।

श्री नंदकिशोर गोईन्का
अध्यक्ष पुरस्कार समिति

उदार दानमना एवं यशस्वी
श्री द्वारिकाप्रसाद सर्राफ-व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस संसार में अनेक प्राणी आते हैं किन्तु उनमें से कुछ ही ऐसे होते हैं, जो अपने श्रेष्ठ कार्यों द्वारा काल-धरातल पर अपना नाम सदैव के लिए अंकित कर जाते हैं। इसी प्रकार के स्वनामधन्य व्यक्तित्वों में दानवीर, यशस्वी-मना सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ भी एक हैं।

आपका जन्म 4 सितम्बर, 1919 को वर्तमान फतेहाबाद के मेहूवाला ग्राम में श्री नंदलाल सर्राफ के यहां हुआ। आप वर्तमान समय में सिरसा में निवास कर रहे हैं और आपकी स्पेयर पार्ट्स की दुकान है। आपने विद्यालयी शिक्षा तो अधिक प्राप्त नहीं की किन्तु जीवन के क्षेत्र में बहुविज्ञ हैं। आप भली भाँति जानते हैं कि जीवन में क्या करना चाहिये तथा क्या नहीं करना चाहिये? धार्मिक प्रकृति के होने के कारण 'दो हाथों से कमाओ-सौ हाथों से दान करो' आपका आदर्श है। समाज सेवा की भावना आपके रोम-रोम में बसी है। इसलिए एक-एक पाई जोड़कर अपने परिश्रम द्वारा उपार्जित राशि का सदुपयोग कर आप पूरे समाज के प्रेरणास्त्रोत बने हुए हैं। आपका विश्वास है कि मानव जीवन का सच्चा ध्येय समाजसेवा एवं अपने उपार्जित धन का श्रेष्ठ कार्यों में विनियोजन है। उसी में मानव प्रगति का रहस्य छिपा है। कोई भी व्यक्ति यदि चाहे तो आपसे सीख सकता है कि धन का सदुपयोग कैसे किया जा सकता है?

आप भारतीय रेडक्रास सोसायटी, जनता भवन ट्रस्ट, सेंट जार्ज एम्बुलेंस एसोसिएशन, हरियाणा राज्य मूक एवं बधिर कल्याण परिषद, नवयुवक अग्रवाल सभा, सिरसा, अग्रोहा विकास ट्रस्ट आदि अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जब भी उचित समझते हैं, संस्थाओं को आर्थिक सहयोग देते रहते हैं।

आपने सिरसा में जनता भवन ट्रस्ट में चार बड़े हाल कमरों, परिचारिकाओं के लिए एक पृथक कक्ष तथा प्रसूतिगृह निर्माण करा अपनी उदारता का परिचय दिया है। एक्सरे के अभाव में होने वाली परेशानियों को देखते हुए आपने वहां एक स्टेण्डिंग एक्सरे मशीन लगा कर दी है। हस्तपाल में छत के पंखे लगाने में भी आपका विपुल सहयोग रहा है।

आपने सिरसा में ही रेडक्रास सोसायटी में मातृ सेवासदन के नाम से एक हस्पताल बनवा कर दिया है, जिसमें सात कमरे, कार्यालय कक्ष आदि हैं। आपने रेडक्रास को लाखों रुपये की राशि का एक भूखण्ड भी लोकसेवा कार्यों हेतु प्रदान किया है।

सिरसा की अग्रवाल सभा तथा अन्य सार्वजनिक संस्थाओं को भी आपका सहयोग समय-समय पर प्राप्त होता रहा है। राष्ट्रीय कार्यों में भी आपका आर्थिक सहयोग सदैव रहता है। राष्ट्रीय आपदा के समय आपने राष्ट्रीय रक्षा कोष हेतु दान प्रदान कर असीम उदारता का परिचय दिया है। वृद्ध अवस्था होते हुए भी आप समाज सेवा कार्यों में युवकों जैसा उत्साह रखते हैं तथा असमाजिक तत्वों से लोहा लेने में किसी से पीछे नहीं रहते। तंत्र-मंत्र में भी आपकी गहरी रुचि है और गुमशुदा बच्चों व व्यक्तियों की खोज में आपको विशेष दक्षता प्राप्त है।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट एवं अग्रवाल समाज की अभ्युन्नति से आपका गहरा लगाव है और समय-समय पर अग्रोहाधाम की यात्रा करते रहते हैं। ट्रस्ट परिसर में स्थित मन्दिरों में लगने वाले प्रसाद को आपने अपनी ओर से प्रति वर्ष देने की घोषणा करके आपने अग्रोहा के प्रति अपनी अनन्य आस्था को व्यक्त किया है। आप अपने जीवन में अग्रोहा के लिए बहुत कुछ करने की कामना रखते हैं।

सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार आपकी इसी उद्दात एवं समाज सेवा भावना का परिचायक है, जो आपके महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा के शुभारम्भ पर 601011/- रु० दान देने की घोषणा से संभव हुआ है। इस पुरस्कार से पावन-तीर्थ अग्रोहा के निर्माण एवं समाज सेवा की प्रेरणा प्राप्त कर असंख्य कार्यकर्त्ता अग्रोहा से जुड़ेंगे और ये पुरस्कार समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष प्रतिमान स्थापित करने में समर्थ होंगे, ऐसी आशा है।

1998 का प्रथम इक्यावन हजार रुपये राशि का पुरस्कार समिति द्वारा सर्वसम्मति से श्री हनुमान जयन्ती पर श्री गंगानगर के सुप्रसिद्ध समाज सेवी **श्री हरपतराय टांटिया** को अग्रोहाधाम में देने का निर्णय किया है।

प्रथम सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित वंदनीय व्यक्तित्व

श्री हरपतराय टांटिया, श्रीगंगानगर (राज.)

श्री हरपतराय टांटिया, अग्रसमाज के उन गिने-चुने व्यक्तियों में हैं, जिनकी गणना पूरे भारत में पूर्णतया समाज को समर्पित, निस्वार्थी, स्वच्छ छवि वाले कार्यकर्त्ताओं में होती है। आप विगत पचास वर्षों से समाज सेवा में संलग्न हैं और आज भी अविरत आपकी यह साधना चालू है।

आपका जन्म 7 नवम्बर, 1929 को अबोहर में श्री लक्ष्मीनारायण टांटिया के यहां हुआ। समाजसेवा के संस्कार आपको कुल परम्परा से मिले। आपके पिता तथा परिवार के सदस्य बड़े ही उदार स्वभाव के थे और आपने अबोहर में टांटिया धर्मशाला, साहित्य सदन में कमरे आदि का निर्माण करा अपनी उदारता एवं समाजसेवा भावना का परिचय दिया था।

श्री टांटिया ने 16 वर्ष की अवस्था में ही लाहौर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। आपने अपने जीवन का स्वयं निर्माण किया और सेवा के साथ-साथ हिन्दी एवं इतिहास विषयों में एम.ए.,बी.एड.,एल.एल.बी. जैसी परीक्षाएं उत्तीर्ण कर उच्चकोटि की अध्ययन वृत्ति का परिचय दिया।

आप बचपन से ही राष्ट्रीय विचारधारा से ओत-प्रोत रहे। 16 वर्ष की अवस्था में ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखाओं में भाग लेने लगे थे और नगर के संघ कार्यवाह, नगर शिक्षक आदि रहे। 1948 में जब संघ पर प्रतिबंध लगा--- राष्ट्रीय भावनाओं को कुचलने का प्रयास किया गया तो आपने भी उसके विरुद्ध आंदोलन में भाग लिया तथा फिरोजपुर में गिरफ्तारी देकर 6 माह तक नगरौटा (हि.प्र.) की युअल जेल में रहे। इसी जेल में उस समय संघ के सभी बड़े नेता लाला हंसराज गुप्त, वसन्तराव ओक, भैय्या जी दाणी आदि को रखा गया था। इसके कारण संघ के अधिकांश कार्यकर्त्ताओं के साथ आज भी आपके निकट सम्बंध हैं। इसी जेल में आपने राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं के सम्मान की रक्षार्थ 40 दिन का अनशन किया। आपकी इस जेलयात्रा के समय में ही भारतीय जनसंघ की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण निर्णय को लिया गया।

आपने शिक्षक के रूप में अपनी आजीविका को प्रारम्भ किया और नोहर, गजसिंहपुर, पदमपुर आदि में अध्यापन किया। 1969 में आप राजकीय सेवा को त्याग श्रीगंगानगर में सनातन धर्म उ.मा. विद्यालय में शिक्षक बने और अनेक वर्षों तक अध्यापन कार्य किया। पाँच वर्षों तक उसके प्राचार्य पद को सुशोभित करने का अवसर भी आपको मिला। आपने महर्षि दयानन्द महाविद्यालय श्रीगंगानगर में व्याख्याता तथा बाबा मस्तनाथ आयुर्वेदिक कॉलेज अस्थल-बोहर (रोहतक) में प्रशासक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आप जहां भी रहे, शिक्षक पद की गरिमा को बढ़ाया तथा संस्थाओं को नवरूप प्रदान किया।

आप प्रारम्भ से ही अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल से जुड़े रहे और आपका पूरा जीवन अग्रसमाज एवं अग्रोहा के निर्माण की कहानी है।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन एवं अग्रोहा विकास ट्रस्ट की जब स्थापना भी नहीं हुई थी और बहुत कम लोग अग्रोहा के विषय में जानते थे, आपने 1964 में श्रीगंगानगर में अग्रवाल नवयुवक संगठन की स्थापना की और उसके माध्यम से अग्रवाल समाज में नई चेतना का समावेश किया। आप वर्षों तक अग्रवाल नवयुवक संगठन एवं अग्रवाल सभा के महामंत्री रहे और विविध प्रकार की गतिविधियों का संचालन कर पूरे क्षेत्र में अग्रवाल संगठन का विस्तार किया।

आपने अग्रसेन जयन्ती पर विशाल शोभायात्राओं, कवि सम्मेलनों, सांस्कृतिक आयोजनों की परम्परा प्रारम्भ की। समाज के प्रतिभावान छात्रों को पुरस्कृत करने, कमजोर बच्चों को पुस्तकीय सहायता तथा असहाय लोगों को चिकित्सा सहायता प्रदान करने आदि की योजनाएं आपने प्रारम्भ की, जिससे लोग संगठन से जुड़े।

आपने श्रीगंगानगर में समाज की महिलाओं को प्रशिक्षण देने के लिए अग्रसेन सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना और निर्धन महिलाओं को सिलाई सीखने पर सिलाई मशीन देने की परम्परा प्रारम्भ कीं, जिससे महिलाओं को स्वावलम्बी बनने में सहायता मिली।

आज से लगभग 30-35 वर्ष पहले आपने महाराजा अग्रसेन के जीवन पर आधारित अग्रसेन प्रदर्शनी एवं अग्रवाल समाज की विभूतियों के चित्रों का निर्माण कराया और उसे स्थान-स्थान पर प्रदर्शित कर लोगों को महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा तथा समाज की विभूतियों के सम्बंध में जानकारी प्रदान की। इस चित्र प्रदर्शनी का प्रदर्शन इंदौर अधिवेशन के अवसर पर किया गया, जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। महाराजा अग्रसेन के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी के निर्माण का पूरे भारत में यह सर्वप्रथम प्रयास था।

सम्मेलन की स्थापना एवं उसके द्वारा इतिहास प्रकाशन से पूर्व जब ऐसी कोई पुस्तक या रचना उपलब्ध नहीं थी, जिससे

समाज-बंधुओं को अपने गौरवपूर्ण इतिहास की जानकारी मिल सके। ऐसी स्थिति में आपने 1968 में अग्रवाल नवयुवक सभा के माध्यम से '**अग्रवाल जाति का ऐतिहासिक परिचय**' पुस्तक का प्रकाशन करा समाज के बंधुओं को अपनी पितृभूमि अग्रोहा एवं उसके महान इतिहास का परिचय कराया। इतिहास लेखन एवं प्रकाशन के साथ आपने अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल का संदेश घर-घर पहुँचाने के लिए 1973 में श्री गंगानगर से अग्रवाल ज्योति पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया और अनेक वर्षों तक उसका सम्पादन कर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण एवं अग्रोहा निर्माण के प्रति लोगों की भावनाओं को उद्‌बुद्ध किया, जिससे बाद में अ. भा. अग्रवाल सम्मेलन जैसी संस्था और मंगल मिलन जैसी पत्रिका के प्रकाशन की पृष्ठभूमि बनी। श्रीगंगानगर जैसे स्थान से अग्रवाल समाज की स्तरीय सामाजिक पत्रिका का प्रकाशन अग्रोहा निर्माण के लिए नींव की पत्थर प्रमाणित हुआ।

यह वह काल था, जबकि अग्रसेन जयन्ती बहुत कम मनाई जाती थी, आपने श्रीगंगानगर में महाराजा अग्रसेन जयन्ती को दीपावली, होली पर्व के समान ही समारोह पूर्वक मनाने, अपने-अपने प्रतिष्ठानों पर प्रकाश करने, विशाल शोभा यात्राओं, सामाजिक बैठकों एवं कवि सम्मेलनों के आयोजन की परम्परा को पुनर्जीवित किया। 1968 में ही हास्य रसावतार काका हाथरसी तथा अन्य कवियों को जयंती पर आमन्त्रित कर लोगों को अपने पूर्वज दादा अग्रसेन की याद दिलाई। इन कवि सम्मेलनों ने अग्रसेन जयन्ती के प्रति जोरदार वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1976 में आपने राजस्थान प्रान्तीय अग्रवाल अधिवेशन पर '**अग्रोहा की कहानी**' पुस्तक का लेखन कर अग्रोहा सम्बन्धी कथाओं की व्यापक जानकारी समाज को प्रदान की। इस पुस्तक की सामग्री को लोगों ने बहुत पसंद किया और उसका उपयोग बाद में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों एवं इतिहास ग्रन्थों में पर्याप्त मात्रा में किया गया। इस प्रकार इतिहास लेखन एवं प्रकाशन दोनों दृष्टियों से आपका योगदान स्तुत्य रहा।

महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा के समय जबकि अग्रोहा के सम्बंध में लोगों की जिज्ञासा बढ़ी, आपने 'अग्रोहा दर्शन' नामक परिचयात्मक पुस्तिका लिखी, जिसका प्रकाशन अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा किया गया। सीमित अवधि में ही इस पुस्तक की 13000 प्रतियों का प्रकाशन इसकी लोकप्रियता का द्योतक है। आपने ट्रस्ट से इस पुस्तक की किसी प्रकार की रायल्टी न लेकर उत्कृष्ट त्याग-भावना का परिचय दिया है।

श्रीगंगानगर के साथ पूरे राजस्थान तथा समीपस्थ हरियाणा, पंजाब आदि प्रांतों में संगठन को मजबूत बनाने की दृष्टि से आपने अपने संयोजन में श्रीगंगानगर में 1976 में विशाल राजस्थान प्रांतीय अग्रवाल अधिवेशन का आयोजन किया, जिसमें पूरे प्रांत एवं समीपस्थ इलाकों से हजारों की संख्या में प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। प्रतिनिधित्व एवं स्वरूप की दृष्टि से यह राजस्थान का सबसे बड़ा प्रथम अधिवेशन था। इस सम्मेलन में हरियाणा के वित्तमंत्री श्री रामशरणचंद मित्तल, सम्मेलन के संस्थापक श्री रामेश्वरदास गुप्त, डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल, श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल, श्री बालेश्वर अग्रवाल, श्री श्रीकिशन मोदी, श्री तिलकराज अग्रवाल, 'नवज्योति' के प्रधान सम्पादक श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल सहित पूरे देश के विशिष्ट व्यक्तित्व, पत्रकार, समाजसेवी सम्मिलित हुए। इसी अधिवेशन में अ.भा. युवा संगठन की नींव रखी गई। जयपुर के श्री सीताराम लोहिया ने अग्रोहा के मंदिर हेतु महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा देने की घोषणा की, अग्रोहा निर्माणार्थ लाखों रूपये के दान की घोषणा हुई और सैकड़ों युवकों ने दहेज रहित विवाह की शपथ लेकर सामाजिक सुधार का आदर्श प्रस्तुत किया।

आपने उसके बाद संगठन का पूरे जिले में विस्तार किया। अ.भा. अग्रवाल सम्मेलन के नेताओं की बैठकें स्थान-स्थान पर आयोजित की—महाराजा अग्रसेन की डाक टिकट प्रकाशित होने पर आपने डाक-टिकट विक्रय की दृष्टि में भी विशेष प्रतिमान स्थापित किया। आपके प्रयासों से पदमपुर में महाराजा अग्रसेन मार्ग की स्थापना हुई।

श्रीगंगानगर में 'अग्रसेन नगर' नामक नगर की स्थापना करके आपने प्रमुख सार्वजनिक स्थलों का नामकरण महाराजा अग्रसेन पर किए जाने का आदर्श प्रस्तुत किया। अग्रसेन नगर में ही अग्रवाल धर्मशाला का निर्माण करा तथा महाराजा अग्रसेन हॉस्पिटल हेतु जमीन क्रय कर सार्वजनिक संस्थाओं की नींव रखी। धर्मशाला में नि:शुल्क चिकित्सालय चलाने में भी आपका विशेष योगदान रहा। यही नहीं, जब श्रीगंगानगर में जवाहर नगर की स्थापना हुई तो आपने वहां एक विशाल भूखण्ड क्रय कर महाराजा अग्रसेन विद्यामंदिर की नींव रखी।

1975 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की स्थापना हुई। आप उसकी कार्यकारिणी के प्रमुख सदस्य रहे और अग्रोहा निर्माण का स्वप्न संजोया। अग्रोहा विकास ट्रस्ट के गठन की घोषणा होने पर आप उसकी विधान निर्मात्री समिति के सदस्य रहे। 1976 में जब अग्रोहा में मंदिर निर्माण की नींव रखी गई, आप उन विशिष्ट व्यक्तियों में थे, जिनकी उपस्थिति में यह शुभकार्य सम्पन्न हुआ।

इस प्रकार आप सम्मेलन तथा अग्रोहा विकास ट्रस्ट से स्थापना के समय से ही जुड़े हैं। 1979 से जनवरी 83 तक आप ट्रस्ट के

मंत्री रहे और उसके विकास की नींव रखी। 1992 में जब श्री नंदकिशोर गोईन्का के संरक्षण में अग्रोहा में नवनिर्माण का विशेष अभियान चला और श्री गोईन्का जी अकेले पड़ गए तो आपने ट्रस्ट के अनुरोध पर प्राचार्य जैसे महत्वपूर्ण पद को त्यागकर अग्रोहा में महाप्रबंधक का कार्यभार संभाला। लगभग साढ़े चार वर्ष तक श्री गोइन्का जी के साथ कंधे से कंधा मिला पूर्ण समर्पण भाव से कार्य किया। इस अवधि में ट्रस्ट में जो कार्य हुए, विकास की मंजिलें तय हुई, संगठन का प्रचार-प्रसार हुआ, वह अभूतपूर्व था। यद्यपि इन सब कार्यों में श्री गोईन्काजी एवं अन्य कार्यकर्त्ताओं की भी भागीदारी रही किन्तु श्री टांटिया जी ने जिस निष्ठा, त्याग एवं समर्पण भाव से अपने आपको अग्रोहा की प्रत्येक निर्माण योजना के लिए संकल्पित किया, उसके कारण अग्रोहा के निर्माण एवं पाँचवे तीर्थधाम के रूप में उसके विकास की दृष्टि से अभूतपूर्व सफलता मिली। इस दृष्टि से श्री गोईन्काजी के साथ आपके योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता।

आपके इस कार्यकाल में अग्रोहा में महालक्ष्मी जी के मंदिर के 90 फुट ऊँचे गुम्बद, हनुमान जी का मन्दिर, शक्ति सरोवर पर 68 कमरों को द्वितीय मंजिल, मंदिरों के आगे विशाल हाल, ट्रस्ट परिसर में व्यापारिक स्थल का निर्माण जैसे अनेक महत्वपूर्ण निर्माण कार्य हुए, अग्रोहा का बजट लाखों से करोड़ों में पहुँचा, शक्ति सरोवर पर मार्बल लगा, मन्दिरों के आगे भव्य झांकियां बनीं, ट्रस्ट परिसर में विद्यादायिनी सरस्वती जी की प्रतिमा स्थापित हुई। हरियाली पार्कों का विस्तार हुआ, प्याऊओं का निर्माण हुआ, अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन शोध केन्द्र की स्थापना हुई, अग्रसाहित्य एवं प्रचार सामग्री का निर्माण हुआ और ट्रस्ट ने नई-नई दिशाओं में कदम बढ़ाये।

आपने शेखावाटी, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा आदि क्षेत्रों में जाकर-घर-घर अग्रोहा निर्माण की अलख जगाई, जिससे संगठन की दृष्टि से अभूतपूर्व कार्य हुआ, लाखों लोग अग्रोहा से जुड़े, अग्रोहा के मेलों में भारी भीड़ जुटने लगी और अग्रोहा निर्माण के प्रति लोगों में जबरर्दस्त भावना पैदा हुई। अग्रोहा से सम्बन्धित संस्थाओं की संख्या 500 से अधिक जा पहुँची।

आपने अग्रोहा निर्माण हेतु धन जुटाने में भी अभूतपूर्व कार्य किया। गांव-गांव, शहर-शहर जाकर ट्रस्टी बनाये, भूमिदान जैसी योजनाएं प्रारम्भ की। आपके कार्यकाल में ट्रस्टियों की संख्या 850 से अधिक जा पहुँची।

आपकी प्रेरणा से श्रीगंगानगर जैसे छोटे शहर एवं समीपस्थ क्षेत्रों में अग्रोहा निर्माण हेतु जो सहयोग मिला, वह अप्रतिम है। उसकी राशि सात-आठ अंकों का स्पर्श करती है। अकेले श्री गंगानगर जिले में ही आपके प्रयत्नों से ट्रस्ट हेतु पचासों ट्रस्टी बने, निर्माणाधीन हाल के लिए 70 से अधिक पंखों की प्राप्ति हुई, कमरों हेतु रजाई एवं गद्दों की व्यवस्था हुई, शक्ति-सरोवर पर कमरों का निर्माण हुआ, पत्थर लगे, भंडारे के लिए बर्तनों तथा अन्न की व्यवस्था हुई। आपकी प्रेरणा से ही गंगानगर के डॉ. तूहीराम गुप्ता ने एक लाख की लागत से पानी की प्याऊ का निर्माण कराया। यहीं के डॉ० चम्पालाल गुप्त ने अग्रोहा एक ऐतिहासिक धरोहर इतिहास पुस्तक का सर्जन तथा वर्षों तक अग्रोहाधाम पत्रिका का मानद (ऑनरेरी) सम्पादन कर उसे सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में विशेष स्थान प्रदान किया।

मेले के अवसर पर जनसहयोग से निशुल्क भंडारों की व्यवस्था भी आपके कार्यकाल की महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।

अग्रवाल समाज एवं अग्रोहा को आपकी सबसे महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक देन श्री गोईन्काजी के सहयोग से महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा का प्रवर्तन एवं सफल संचालन था। यद्यपि इस प्रकार के रथ के निर्माण की योजना वर्षों से विचाराधीन थी किन्तु उसे व्यावहारिक रूप आपके कार्यकाल में ही मिल सका। आप इस रथ के निर्माण एवं संचालन में श्री गोईन्काजी के सहयोगी बने और लगभग डेढ़ वर्ष तक रथयात्रा का सफल संयोजन एवं संचालन कर अग्रवाल जाति के 5000 वर्षों के इतिहास में नये अध्याय जोड़े।

आपने इस ऐतिहासिक रथयात्रा का शुभारम्भ श्रीगंगानगर से बड़े ही धूमधाम से करा उसके लिए जोरदार वातावरण तैयार किया। इस रथयात्रा के शुभारम्भ पर जो शोभायात्रा निकली, ट्रस्ट के पदाधिकारियों का सम्मान हुआ, वह अपने आप में अद्भुत था। नगर में सवा सौ के लगभग तो स्वागत द्वार ही बने। इस रथयात्रा के शुभारम्भ के अवसर पर श्रीगंगानगर के मंच से अग्रोहा निर्माणार्थ 30 लाख रुपये के दान की घोषणाएं हुई, जिसने पूरे देश में दान हेतु आदर्श एवं प्रेरणास्त्रोत का कार्य किया और उसके कारण लगभग अढ़ाई करोड़ रूपये की राशि का संग्रह संभव हो सका।

आप इस रथयात्रा हेतु स्वयं राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मुंबई आदि प्रदेशों में गए, लगभग 50000 किलोमीटर की यात्रा की, एक-एक दिन में 5-5, 6-6 स्थानों की यात्राओं का आयोजन किया, बैठकें की, भाषण दिए और रात्रि के 2-2 बजे तक अथक परिश्रम कर इस यात्रा को सफल बनाया।

आपके नेतृत्व में रथयात्रा ने अग्रोहा निर्माण, संगठन, प्रचार-प्रसार एवं धन संग्रह की दृष्टि से नये-नये प्रतिमान स्थापित किए। आपके भाषणों में वह जादुई प्रभाव था, जिसे सुनने के लिए श्रोता देर रात्रि तक आपकी प्रतीक्षा करते। देर रात्रि तक रथयात्रा का संचालन, एक-एक पाई का हिसाब और फिर अगले दिन की रथयात्रा की तैयारी—जैसे आपके जीवन का अंग बन

गया था। होली, दिवाली, रविवार बिना किसी प्रकार का विराम लिए डेढ़ वर्ष तक अविरत रथयात्रा का संचालन कोई साधारण कार्य न था, किन्तु आपने उसे पूरी निष्ठा एवं तत्परता से निभाया। अंततः आप गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गए, हॉस्पिटल में भरती होना पड़ा किन्तु आपने हार न मानी।

जेठ आषाढ़ मास को तपतपाती गर्मी में जबकि पारा अपने सर्वोच्च बिन्दू पर था, लू एवं भीषण गर्मी के कारण घर से बाहर निकलना प्राणों की बाजी लगाना था, आपने ऐसे कठोर वातावरण में अकेले राजस्थान के जोधपुर, जेसलमेर, बाड़मेर जैसे वीरानी प्रदेशों की यात्रा की। घोर अस्वस्थ होने के बावजूद कड़कड़ाती सर्दी और गर्मी में रथयात्रा को चालू रखा, नये-नये अनजान प्रदेशों में गए, जहां लोग अग्रसेन, अग्रोहा का नाम तक नहीं जानते थे, वहाँ हजारों लाखों लोगों की सभाओं का आयोजन किया, अग्रोहा का संदेश घर-घर पहुँचाया।

यह आपके कुशल संयोजन का ही परिणाम था कि भिण्ड, मुरैना, दतिया, आगरा, ग्वालियर, मुंबई आदि में रथयात्रा ने सफलता के सभी मानदण्ड तोड़ दिए। अकेले मुंबई के मलाड मैदान में ही लाखों लोगों की भीड़ जुटी और कई घंटों तक यातायात अवरुद्ध रहा। जहां-जहां रथयात्रा गई, स्वागत में ऐसे लगा, जैसे दीपावली आ गई हो। लोगों ने वंदनवार सजाई, रंगोलिया बनाईं, महिलाओं ने कलश धारण किए और लोगों का अपार समूह उसके स्वागतार्थ टूट पड़ा।

इस रथयात्रा के समारंभ पर ही सिरसा के सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ द्वारा 601011/- रु.देने की घोषणा हुई, जिससे 51-51 हजार के दो पुरस्कारों का प्रवर्तन संभव हुआ।

इस रथयात्रा ने समाज में जागरण, संगठन एवं अग्रोहा निर्माण की दृष्टि से जो कार्य किया, उसका दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है। अग्रोहा कि प्रत्येक ईंट और कण-कण में श्री नंदकिशोर गोईन्का के साथ उनके तप, त्याग और निष्ठापूर्ण प्रयत्नों की कहानी छिपी है।

आपका व्यक्तित्व बहुमुखी एवं सेवाओं का क्षेत्र, अत्यंत विस्तृत है। समाज सेवा के साथ साहित्यिक, शैक्षणिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, गौ-सेवा-कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है, जो आपके योगदान से अछूता रहा हो।

आप महावीर दल, साहित्य परिषद्, श्री सनातनधर्म उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बाबा मस्तनाथ आयुर्वेदिक कॉलेज, अस्थल बोहर (रोहतक) आदि अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे और जिस संस्था में भी कार्य किया, उसे प्रगति के चरम उत्कर्ष पर पहुँचा दिया। महावीर दल के 12-13 वर्षों तक मंत्री रहे और वहां भवन तथा दुकानों के निर्माण, औषधालय एवं वाचनालय, प्याऊ की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साहित्य परिषद के महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष के रूप में साहित्य के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका रही।

आप महान गौ प्रेमी हैं। वर्षों तक जिला गौरक्षा महाभियान समिति के अध्यक्ष रहे, दिल्ली में आयोजित प्रदर्शन में भाग लिया और हजारों की संख्या में गौभक्तों को प्रदर्शन में सम्मिलित कर निष्ठा-भावना का परिचय दिया। वर्तमान में भी आप श्री गौशाला, सुखाड़िया सर्किल, श्रीगंगानगर के महामंत्री के रूप में उसे नया रूप देने के लिए संलग्न हैं।

राजनीति में आप भारतीय जनसंघ से सम्बद्ध रहे और जिला मंत्री के रूप में अपनी सेवाएं दीं। राजस्थान कार्यकारिणी के भी वर्षों तक सदस्य रहे। आपकी प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता को देखते हुए आपका नाम क्षेत्र के विधायक रूप में प्रस्तावित हुआ किन्तु आपने विनम्रतापूर्वक उसे इन्कार कर दिया। सेवा भारती के जिलाध्यक्ष रूप में भी आपकी सेवाएं उल्लेखनीय रहीं।

आप तप, त्याग एवं सेवाभावना की साक्षात् प्रतिमा हैं। निस्पृह, निष्काम भाव से सेवा आपके रोम-रोम में बसी है। कर्त्तव्य-परायणता, निष्ठा, समर्पण भावना आपके जीवन के अभिन्न अंग हैं। आपने अपने जीवन में कभी पद, प्रतिष्ठा यश की कामना नहीं की। आपका स्वभाव अत्यंत ही सरल एवं विनम्र है। समाज के सभी वर्गों में समान रूप से लोकप्रिय है। आपकी कथनी-करनी में अद्भुत समानता है। सबके सहजस्नेही एवं आत्मीय हैं। अग्रोहा के प्रति आस्था एवं निष्ठा इतनी है कि विगत 25 वर्षों में शायद ही कोई ऐसा वर्ष रहा हो, जब आपने अग्रोहा की यात्रा न की हो। प्रलोभन एवं अहंकार आपको छू तक नहीं गया है। हर क्षण समाज सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। पचास वर्षों की इस दीर्घ समाज-साधना के बाद भी अपनी स्वच्छ छवि एवं लोकप्रियता को बनाए रखना आपके जीवन की ऐसी उपलब्धि है, जिस पर पूरा समाज गौरव का अनुभव कर सकता है। आप गृहस्थ में रहते हुए भी सच्चे संत हैं। अग्रवाल समाज के दूसरे गांधी हैं। आपकी कार्य एवं उपलब्धियां सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

ऐसे महान निष्काम कर्मयोगी एवं समाज सेवी को प्रथम सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार 1998 से सम्मानित कर ट्रस्ट स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता एवं आपके उज्ज्वल भविष्य तथा दीर्घायुष्य की कामना करता है

-डॉ. चम्पालाल गुप्त
संयोजक, पुरस्कार समिति

हरपतराय टांटिया राजस्थान वनवासी कल्याण
रिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गुणवंतसिंह
ठारी एवं अन्य कार्यकर्ताओं के साथ

श्री हरपतराय टांटिया द्वारा नवज्योति के सम्पादक
श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल का सम्मान

श्री हरपतराय टांटिया महाराष्ट्र में रथयात्रा के प्रवेश के अवसर पर
सुप्रसिद्ध समाजसेवी विजय चौधरी एवं श्री बी. डी. गुप्ता के साथ

श्री हरपतराय टांटिया रथयात्रा के समय मुरैना के जननायक एवं
उद्योगपति श्री रमेशचंद्र 'भैयाजी' के साथ

श्री हरपतराय टांटिया अपनी धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्रावती एवं पोते के साथ

राजस्थान की विधायिका श्रीमती मीना अग्रवाल द्वारा
श्री टांटिया का अभिनंदन

श्री हरपतराय टांटिया की समाजिक एवं शैक्षणिक
सेवाओं का अभिनंदन

श्री हरपतराय टांटिया उद्‌बोधन
की मुद्रा में

महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा के अवसर पर श्री टांटिया को थैली
भेंट करते हुए पिलानी के बन्धु

अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन शोध संस्थान के उद्‌घाटन पर श्री नंदकिशोर
गोईन्का एवं श्री रामनाथ गुटगुटिया के साथ श्री टांटिया जी